

डॉ ज़ाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा का नई शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता

अर्पिता¹, डॉ० कीर्ति कटिंग²

¹शोधार्थी शिक्षाशास्त्र इलाहाबाद स्कूल ऑफ एजुकेशन सैम हिंगिनबाटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय प्रयागराज - 211007

²असिस्टेंट प्रोफेसर इलाहाबाद स्कूल ऑफ एजुकेशन सैम हिंगिनबाटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय प्रयागराज - 211007

सारांश

यह शोध पत्र डॉ ज़ाकिर हुसैन द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों और विचारों की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। डॉ. हुसैन का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, सामाजिक जिम्मेदारी, और राष्ट्रीय निर्माण का सशक्त माध्यम है। उनके अनुसार, शिक्षा को उत्पादक कार्य, शारीरिक श्रम और नैतिक मूल्यों से जोड़ा जाना चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 भी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है – जिसमें ज्ञान, कौशल, नैतिकता, और सामाजिक उत्तरदायित्व को विशेष स्थान दिया गया है। इसके साथ ही, कौशल-आधारित शिक्षा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, कला और हस्तकला का समावेश तथा स्थानीयता पर आधारित शिक्षा प्रणाली—डॉ. हुसैन के नैतिक श्रम और स्थानीय आवश्यकताओं से जुड़ी शिक्षा के विचारों से काफी मेल खाती है। यह शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यद्यपि समय और संदर्भ बदल चुके हैं, परंतु डॉ. ज़ाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा के आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। नई शिक्षा नीति के विभिन्न प्रावधान उनके दृष्टिकोण के आधुनिक रूपांतरण प्रतीत होते हैं।

मुख्य शब्द: डॉ. ज़ाकिर हुसैन, बुनियादी शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, नैतिक शिक्षा, कार्य आधारित शिक्षा, कौशल विकास, मातृभाषा।

1. परिचय-

भारत की शिक्षा प्रणाली में समय-समय पर अनेक नवाचार हुए हैं, जिनमें कुछ विचारक स्थायी प्रभाव छोड़ने में सफल रहे हैं। डॉ. ज़ाकिर हुसैन का नाम उनमें अग्रणी है, जिन्होंने "बुनियादी शिक्षा" के माध्यम से नैतिक, व्यावसायिक, और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की अवधारणा को बढ़ावा दिया। उनकी शिक्षा-दृष्टि केवल जानकारी प्राप्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह शिक्षा को जीवन जीने की कला मानते थे। वहीं, वर्ष 2020 में लागू नई शिक्षा नीति (NEP 2020) भी एक बड़ा सुधारात्मक कदम है, जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को पुनर्परिभाषित करता है। यह नीति बच्चों में नैतिक मूल्यों, सृजनात्मकता, और जीवन-कौशल को विकसित करने पर बल देती है। यह शोध-पत्र डॉ. ज़ाकिर हुसैन की "नैतिक मूल्यों पर आधारित बुनियादी शिक्षा" और NEP 2020 के दृष्टिकोणों के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता

है, ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार उनके विचार आज भी भारत की शिक्षा नीति में प्रासंगिक हैं।

1.1 साहित्य सर्वेक्षण - *शेखावत २०२१* अनुसार शोध पत्र का उद्देश्य डॉ. ज़ाकिर हुसैन के स्कूल शिक्षा को एक क्रमिक रूप में देखने के दृष्टिकोण का पता लगाना और राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के साथ उनके दृष्टिकोण को संरेखित करने वाला एक ढांचा विकसित करना है जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिल सके।, *शर्मा २०२४* शोध पत्र के अनुसार डॉ. ज़ाकिर हुसैन के दर्शन और शैक्षिक विचार पर एक अवलोकन पर अध्ययन करना है इसमें द्वितीय स्रोत पर आधारित एक वर्णात्मक और अन्वेषणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनके दर्शन के अनुसार, शिक्षा शिक्षा छाया से प्रकाश की ओर एक यात्रा है, जो प्लेटोनिक विचार को प्रतिध्वनित करती है। प्लेटो, हेगेल और गांधीजी के विचारों से डॉ. हुसैन जी प्रभावित थे किन्तु मिल के विचारों को अस्वीकार किया।, *लाल २०२४* के द्वारा डॉ. ज़ाकिर हुसैन जी ने पारंपरिक मूल्यों के अनुभवात्मक शिक्षा के एकीकृत करने पर जोर दिया और मालवीय जी ने समावेशी और समग्र शिक्षा कि वकालत किया जो एनईपी २०२० के उद्देश के साथ प्रतिध्वनित है। इन दोनों के शैक्षिक विचारों का एनईपी २०२० में जोड़ा गया है। परिणामतः दोनों के विचारों को समाहित करने से वर्तमान शिक्षा पर क्रियान्वयन में सुधार हो सकता है। यह शोध पत्र एक आलोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है।

2. डॉ. ज़ाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा

2.1 बुनियादी शिक्षा की परिभाषा

बुनियादी शिक्षा (Nai Talim) एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली है, जिसकी परिकल्पना महात्मा गांधी ने की थी और जिसे डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से विकसित किया। यह शिक्षा प्रणाली हाथ, दिल और दिमाग—तीनों के समुचित विकास पर आधारित है।

डॉ. ज़ाकिर हुसैन के अनुसार, "शिक्षा का अर्थ है—व्यक्ति का समग्र विकास जो उसे स्वावलंबी, नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनाए।" (ज़ाकिर हुसैन समिति, 1938, बेसिक प्रिंसिपल्स पृष्ठ: 11-18)

2.2 शिक्षा और श्रम का एकीकरण

बुनियादी शिक्षा का केंद्रीय तत्व है—उत्पादक श्रम के साथ शिक्षा का समन्वय। बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ खेती, कटाई, बुनाई, कारीगरी, आदि जैसे कार्यों से जोड़कर जीवन के वास्तविक अनुभव प्रदान करना इस शिक्षा का उद्देश्य था।

डॉ. ज़ाकिर हुसैन मानते थे कि "कार्य से जुड़ी शिक्षा ही आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का मार्ग है।" (ज़ाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट, पृष्ठ: 11-12)

2.3 नैतिकता और चरित्रनिर्माण-

डॉ. हुसैन की शिक्षा में नैतिक मूल्यों जैसे कि ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन, और सामाजिक सेवा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे मनुष्य और जिम्मेदार नागरिक के निर्माण के लिए होनी चाहिए।

2.4 मातृभाषा में शिक्षा

उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा के माध्यम को अनिवार्य माना। उनका मानना था कि मातृभाषा के द्वारा ही बच्चा अपने परिवेश, संस्कृति और मूल्यों से जुड़ पाता है।

2.5 समाज से जुड़ी शिक्षा

डॉ. ज़ाकिर हुसैन की शिक्षा-दृष्टि समाज-केन्द्रित थी। वह चाहते थे कि विद्यार्थी अपनी शिक्षा के माध्यम से समाज की समस्याओं को समझें और उनके समाधान में योगदान दें। उनका सपना था *एक ऐसा भारत, जहाँ शिक्षा से जागरूक, श्रमिक, और नैतिक नागरिक बनें।*

3. नई शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में घोषित नई शिक्षा नीति (NEP 2020), भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव लाने वाली ऐतिहासिक नीति है। यह नीति केवल सूचना आधारित शिक्षा से हटकर समग्र, समावेशी, लचीली और मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देती है।

नीति का उद्देश्य है कि *"शिक्षा को ज्ञान, नैतिकता, कौशल और चरित्र निर्माण का एकीकृत माध्यम बनाना"* (NEP 2020, हिंदी संस्करण, 6.20)

3.1 पाठ्यक्रम संरचना

NEP 2020 ने परंपरागत 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 प्रणाली लागू की है:

- 5 वर्ष: बालवाड़ी + कक्षा 1-2 (Foundational)
- 3 वर्ष: कक्षा 3-5 (Preparatory)
- 3 वर्ष: कक्षा 6-8 (Middle)
- 4 वर्ष: कक्षा 9-12 (Secondary)

इसका उद्देश्य शिक्षा को विकासात्मक चरणों के अनुरूप बनाना है।

3.2 मातृभाषा में शिक्षा (Mother Tongue-based Learning)

NEP के अनुसार, कक्षा 5 (या जहाँ तक संभव हो वहाँ तक) तक शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में दी जाएगी। यह बिंदु डॉ. ज़ाकिर हुसैन के दृष्टिकोण से मेल खाता है।

3.3 नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों पर बल

नीति में "नैतिकता, करुणा, सह-अस्तित्व, ईमानदारी, जिम्मेदारी" जैसे मूल्य-आधारित शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया गया है। यह डॉ. हुसैन की नैतिक शिक्षा की अवधारणा से जुड़ा हुआ है।

3.4 व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)

NEP 2020 में कक्षा 6 से ही व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे बढईगिरी, बागवानी, सिलाई, आदि) को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। छात्रों को इंटरनशिप और स्किल डेवलपमेंट के अवसर भी मिलेंगे। यह भी बुनियादी शिक्षा की "श्रम के साथ शिक्षा" वाली अवधारणा को दर्शाता है।

3.5 समग्र विकास (Holistic Education)

NEP 2020 में छात्रों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास पर जोर दिया गया है। यह शिक्षा को केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का साधन मानती है।

3.6 डिजिटल शिक्षा और तकनीकी समावेशन

NEP ने डिजिटल युग को देखते हुए ऑनलाइन लर्निंग, ई-कंटेंट, और टेक्नोलॉजी इंटीग्रेशन पर बल दिया है। यह डॉ. हुसैन के युग से एक नया पक्ष है, जो आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

4. तुलनात्मक विश्लेषण: डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा बनाम नई शिक्षा नीति 2020

यहाँ हम दोनों दृष्टिकोणों की प्रमुख अवधारणाओं, उद्देश्यों और कार्यान्वयन में समानताओं एवं भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं।

4.1 समानताएँ (Similarities)

क्रम सां०	मुख्य बिंदु	डॉ. जाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा	नई शिक्षा नीति 2020
1.	नैतिक और मूल्य आधारित-बल पर शिक्षा	- शिक्षा को चरित्र निर्माण और नैतिकता से जोड़ा - छात्रों को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाना	नैतिक, संवैधानिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को शिक्षा का अंग बनाया गया
2.	व्यावसायिक एवं श्रम आधारित शिक्षा	- शिक्षा के साथ उत्पादक श्रम को जोड़ा गया (जैसे—कटाई, कढ़ाई, कारीगरी) - आत्मनिर्भरता को शिक्षा का आधार बनाया	- कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया "विकासोन्मुख कौशल और " सुविधा की इंटरनेट
3.	मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा	प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने के पक्षधर	कक्षा 5 तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा
4.	समाज केंद्रित-का शिक्षा दृष्टिकोण	शिक्षा को सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन माना	शिक्षा को 'भारतकेंद्रित-' और स्थानीय संदर्भों से जोड़ने पर बल

4.2 भिन्नताएँ (Differences)

क्रम सां०	मापदंड	डॉ जाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा	नई शिक्षा नीति 2020
1.	समय और परिप्रेक्ष्य	औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय चेतना के साथ	वैश्विक प्रतिस्पर्धा, डिजिटल युग की मांगों के अनुरूप
2.	तकनीक का समावेशन	तकनीक की भूमिका नगण्य	डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन लर्निंग, ई-कंटेंट
3.	दृष्टिकोण की प्राथमिकता	आत्मनिर्भरता और श्रमशीलता	नवाचार, रोजगार, वैश्विक अवसर

क्रम सां०	मापदंड	डॉ. जाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा	नई शिक्षा नीति 2020
1.	व्यवसायिक शिक्षा का माध्यम	हस्तकला, कृषि आधारित कौशल	आधुनिक स्किल जैसे कोडिंग, IT, डिज़ाइन
5.	शिक्षा का मूल्यांकन	मूल्य, चरित्र और समाज सेवा पर आधारित	मूल्यांकन में मल्टीपल चॉइस, होलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड, AI आधारित मूल्यांकन

4.3 एकरूपता और आवश्यक समायोजन

हालाँकि दोनों में समानताएँ हैं, फिर भी NEP 2020 को और अधिक नैतिक तथा श्रम-आधारित बनाने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा-दृष्टि को पुनः अपनाने की आवश्यकता है। उदाहरणतः आज की डिजिटल शिक्षा को नैतिकता से जोड़ने के लिए बुनियादी मूल्यों की शिक्षा जरूरी है। केवल रोजगार पर केंद्रित शिक्षा न होकर चरित्र निर्माण, सामाजिक सेवा और स्थानीयता का समावेश भी जरूरी है।

5. डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा-दृष्टि की वर्तमान प्रासंगिकता

आज के 21वीं सदी के जटिल, तकनीकी और प्रतिस्पर्धात्मक सामाजिक परिदृश्य में यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है कि डॉ. जाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा की विचारधारा आज कितनी प्रासंगिक है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक दर्शन है।

5.1 नैतिक संकट और मूल्यज़रूरत की शिक्षा आधारित-

वर्तमान में शिक्षा केवल डिग्री और नौकरी पाने का माध्यम बनती जा रही है, जबकि समाज में भ्रष्टाचार, असहिष्णुता और नैतिक पतन तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे समय में डॉ. जाकिर हुसैन की यह बात अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है:

"यदि शिक्षा चरित्र निर्माण नहीं कर रही, तो वह केवल अज्ञान को परिष्कृत कर रही है।" (विवेकानंद साहित्य, पृष्ठ लगभग 382-383)

उनकी शिक्षा-दृष्टि हमें सिखाती है कि नैतिक मूल्यों को शिक्षा में प्राथमिकता देना न केवल आदर्श है, बल्कि सामाजिक स्थायित्व के लिए आवश्यक है।

5.2 आत्मनिर्भर भारत और बुनियादी शिक्षा

भारत आज "आत्मनिर्भर भारत" की ओर अग्रसर है। डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा श्रम, कारीगरी, स्थानीय संसाधनों और व्यावसायिक कौशल से जुड़ी हुई थी — जो आत्मनिर्भरता का मूल आधार है।

- उनके अनुसार, श्रम को सम्मान देना और व्यवहारिक कार्यों के साथ सीखना, शिक्षा को समाजोन्मुख बनाता है।
- यह आज की स्किल-आधारित अर्थव्यवस्था से गहरे मेल खाता है।

5.3 ग्राम्य भारत और स्थानीय विकास

डॉ. जाकिर हुसैन ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण को शिक्षा के केंद्र में रखना चाहते थे। आज भी भारत की

60% से अधिक जनसंख्या गांवों में रहती है, लेकिन वहाँ शिक्षा की स्थिति कमजोर है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि: ग्राम-केंद्रित, लोक-आधारित और अन् उत्पादोंमुखी थी। जो NEP 2020 में "स्थानीय ज्ञान" और "ग्राम्य इंटरनशिप" जैसी योजनाओं से मेल खाती है।

5.4 समग्र जीवन कौशल और विकास

NEP 2020 जीवन-कौशल, आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता आदि पर बल देता है। डॉ. ज़ाकिर हुसैन भी चाहते थे कि शिक्षा केवल जानकारी नहीं, व्यवहारिक समझ, सहानुभूति और नेतृत्व जैसे गुणों का भी विकास करे।

उनके अनुसार "एक अच्छा विद्यार्थी वही है जो समाज को समझे, उसमें भाग ले और उसमें बदलाव लाए।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 11-12)

5.5 आधुनिकता और परंपरा का संतुलन

आज की शिक्षा प्रणाली में आधुनिकता (Technology, Coding, AI) बढ़ रही है, लेकिन नैतिकता, परंपरा और सांस्कृतिक जड़ें कमजोर हो रही हैं।

डॉ. हुसैन की शिक्षा-दृष्टि इस बात को संतुलित करती है:

$$\text{आधुनिक ज्ञान} + \text{नैतिक संस्कार} + \text{श्रमशीलता} = \text{समग्र नागरिक}$$

अतः हम कह सकते हैं कि डॉ. ज़ाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा केवल अतीत की नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए एक मजबूत नींव है।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

डॉ. ज़ाकिर हुसैन की बुनियादी शिक्षा केवल एक शैक्षिक प्रयोग नहीं थी, बल्कि यह एक वैचारिक क्रांति थी, जिसका उद्देश्य था — व्यक्ति और समाज दोनों का नैतिक, व्यावसायिक और सामाजिक उत्थान।

- डॉ. ज़ाकिर हुसैन की शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों, श्रम-शीलता, मातृभाषा, व्यावसायिक कौशल, और समाज-केंद्रित शिक्षा पर आधारित थी।
- वहीं, नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भी आधुनिक संदर्भों में इन्हीं तत्वों को समाहित करने का प्रयास करती है — जैसे कि मूल्य-शिक्षा, स्थानीय भाषा, स्किल डेवलपमेंट, और समग्र शिक्षा।

दोनों में प्रमुख अंतर यह है कि जहाँ डॉ. हुसैन की शिक्षा ग्राम-केंद्रित और श्रम-केंद्रित थी, वहीं NEP 2020 वैश्विक प्रतिस्पर्धा और डिजिटल नवाचारों के साथ संतुलन बिठाने की कोशिश करती है।

अतः कहा जा सकता है कि "यदि नई शिक्षा नीति 2020 को डॉ. ज़ाकिर हुसैन की नैतिक और श्रमशील शिक्षा-दृष्टि से जोड़ा जाए, तो यह भारत के लिए एक सशक्त, आत्मनिर्भर और नैतिक समाज का निर्माण कर सकती है।"

7. सुझाव (Recommendations)

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

7.1 नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाए

हर स्तर पर नैतिकता, करुणा, ईमानदारी जैसे मूल्यों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

7.2 श्रम और उत्पादक कार्यों को पुनः शिक्षा से जोड़ा जाए

बच्चों को स्किल डेवलपमेंट के साथ-साथ श्रम आधारित गतिविधियों में व्यस्त रखा जाए, जिससे आत्मनिर्भरता और सम्मान का भाव जागे।

7.3 ग्राम्य और स्थानीय शिक्षा पर विशेष बल

ग्राम-केंद्रित शिक्षा परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाए ताकि ग्रामीण भारत भी शिक्षा से समृद्ध हो सके।

7.4 शिक्षकों को डॉ जाकिर हुसैन की शिक्षा दृष्टि से प्रशिक्षित किया जाये

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डॉ. हुसैन की नैतिक शिक्षा-दृष्टि और "नई तालीम" की अवधारणा को समाहित किया जाए।

7.5 डिजिटल शिक्षा में मानवीयता जोड़ी जाए

आज की तकनीकी शिक्षा को भी मानवीय और नैतिक मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है, जिससे तकनीक केवल यंत्र न रहकर सामाजिक उत्थान का साधन बने।

डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा-दृष्टि और NEP 2020 के मूल विचारों में एक सार्थक संवाद और संभावनाओं का पुल है। यदि भारत अपने भविष्य को नैतिक, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना चाहता है, तो हमें इन दोनों दृष्टिकोणों को समन्वित रूप से कार्यान्वित करना होगा।

सन्दर्भ सूची

1. अजीज टी. (2007) 'जाकिर हुसैन वैकल्पिक शैक्षिक प्रतिमान रच रहे हैं, शिक्षा के प्रोफेसर, उन्नत अध्ययन संस्थान', शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया एनसीईआरटी स्मारक व्याख्यान श्रृंखला।
2. अली जि. और त्यागी (2011) 'शैक्षिक शिक्षक प्रशिक्षण पर डॉ. जाकिर हुसैन के विचार' एशियन साइंस, प्रष्ठ:112-115
3. "मूल राष्ट्रीय शिक्षा: जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट तथा विस्तृत पाठ्यक्रम, महात्मा गांधी की प्रस्तावना सहित (हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा, 1938)" पृ. 11-12
4. NEP 2020, हिंदी संस्करण (§6.20) - "स्कूली शिक्षा में मानवीय मूल्यों तथा समाज-संवैगात्मक-नैतिक विकास पर बल"।
5. बानो एफ. (2019) 'स्वतंत्र भारत में एक शिक्षाविद के रूप में डॉ. जाकिर हुसैन का योगदान', अंतराष्ट्रीय जर्नल सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान, आईएसएसएन-2249-2496
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (हिंदी संस्करण), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार — धारा 4.4, पृ. 11-12
7. लाल डी. (2024) 'जाकिर हुसैन और मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों और नई शिक्षा नीति २०२० के सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता : एक आलोचनात्मक विश्लेषण', रिसर्चगेट, प्रष्ठ:17-23
8. शर्मा पी. (2024) 'डॉ. जाकिर हुसैन के दर्शन और विचारों पर एक अवलोकन' विज्ञान संचार और प्रौद्योगिकी में उन्नत अनुसन्धान का अंतराष्ट्रीय जर्नल, आईएसएसएन-2581-9429, प्रष्ठ:273-279
9. शेखावत एस. और मिश्रा पी. (2024) स्कूली शिक्षा जीवन कि एक क्रमिक शुरुआत: डॉ. जाकिर हुसैन की दृष्टिकोण', डबल-ब्लाइंड, ओपन एक्सेस, समकक्ष-समीक्षित रेफरी- अंतराष्ट्रीय जर्नल, प्रभाव कारक:7.938, खण्ड- 21, आईएसएसएन- 2393-8048241, प्रष्ठ: 241-246
10. हिंदी अनुवाद (रामकृष्ण मिशन, कोलकाता) — "विवेकानंद साहित्य", खंड 4, पृष्ठ लगभग 382-383 में मिलता है।